CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिषदर्शन

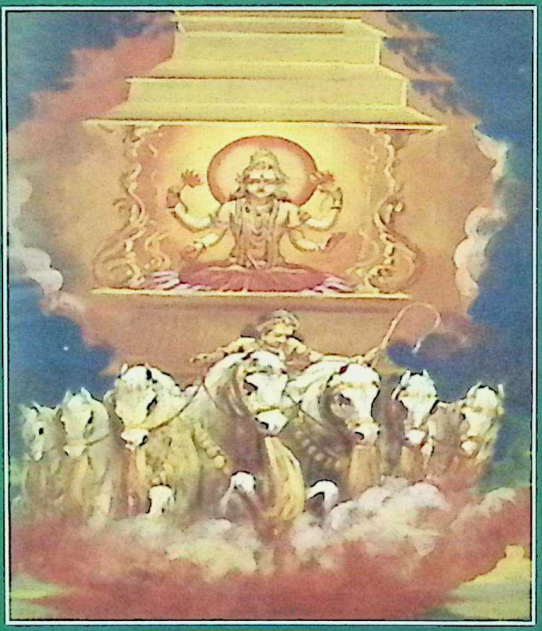

लेखक

श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य

स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिषदर्शन

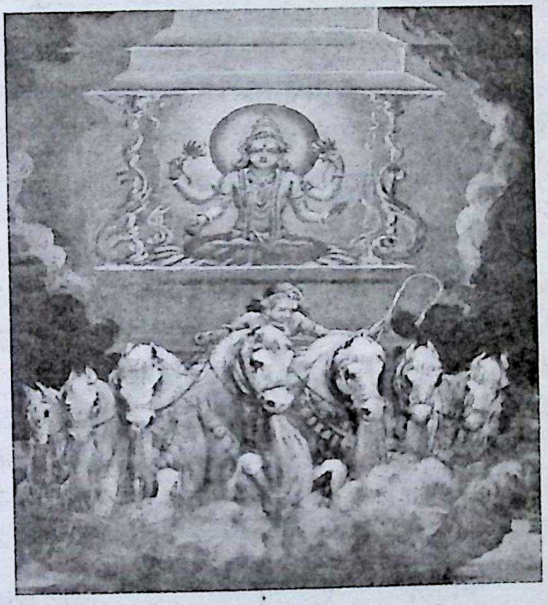

लेखक

श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर-श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य

स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहरिः

श्रीगणेशाय नमः

ज्योतिषदर्शन

विषयानुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ
	प्रकाशनप्रशस्ति	०२
	प्रकाशकीय	०३
	विषयानुक्रमणिका	०४
१.	ज्योतिष	०५
२.	कालस्वरूप	११
३.	कालाभिव्यञ्जक	१६
४.	कालावयव	१९
५.	कालात्मा	२२
	अनुरोध	२६
	प्रार्थना	२७
	स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें	२८-३२

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहरिः

श्रीगणेशाय नमः

ज्योतिषदर्शन

१.ज्योतिष

ऋक्, यजुः, साम और अथर्वसंज्ञक चार वेद हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिषसंज्ञक छह वेदाङ्ग हैं। पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र चार उपाङ्ग हैं। उपपुराणोंका पुराणोंमें अन्तर्भाव युक्त है। वैशेषिक – शास्त्रका न्यायमें अन्तर्भाव है। महाभारत और रामायणसंज्ञक इतिहासद्वयका तथा साङ्ख्य, पातञ्जल, पाशुपत और वैष्णवागमोंका अभ्युदय – निःश्रेयसप्रद धर्मशास्त्रोंमें अन्तर्भाव युक्त है।

उक्त रीतिसे चतुर्विध वेद, षडङ्ग, पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र – चौदह विद्यासंस्थान हैं। –

"पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश।।"
(याज्ञवल्क्यस्मृति १.३)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश।।"
(महाभारत - आश्वमेधिक ९२ दाक्षिणात्य)

आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थशास्त्रसहित उक्त चतुर्दश (१४) विद्यासंस्थान अष्टादश (१८) सिद्ध होते हैं। -

"आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेत्यनुक्रमात्।
अर्थशास्त्रं परं तस्माद्विद्या ह्यष्टादश स्मृताः।।"
(शिवपुराण वाय० २.२३)

सीतोपनिषत् के अनुसार उक्त चतुर्दश (१४)- विद्यासंस्थानके अतिरिक्त अयन (१५) - संज्ञक उपाङ्ग एवम् साम्प्रदायिक आचाररूप समयाचार (१६) के साथ सङ्गति साधनेवाले निबन्धग्रन्थ (१७) तथा इतिहास (१८), वास्तुवेद (१९), धनुर्वेद (२०), गान्धर्ववेद (२१), आयुर्वेद (२२) - संज्ञक उपवेद ; दण्ड (२३), नीति (२४), व्यापारविद्या (२५), वायुजयविद्या (२६) - नामक बारह विद्याका उल्लेख है। निबन्धग्रन्थका समयाचारमें तथा इतिहासका पुराणमें अन्तर्भाव कर लेनेपर चौबीस (२४) - विद्यासंसथान सिद्ध होते हैं।

शुक्रनीतिके अनुसार विद्याके बत्तीस प्रभेद इस प्रकार हैं -

"ऋग्यजुः साम चाथर्वा वेदा आयुर्धनुः क्रमात्।
गान्धर्वश्चैव तन्त्राणि उपवेदाः प्रकीर्तिताः।।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१.ज्योतिष

''शिक्षा व्याकरणं कल्पो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
छन्दः षडङ्गानीमानि वेदानां कीर्त्तितानि हि।।"
''मीमांसातर्कसाङ्ख्यानि वेदान्तो योग एव च।
इतिहासाः पुराणानि स्मृतयो नास्तिकं मतम्।।"
''अर्थशास्त्रं कामशास्त्रं तथा शिल्पमलङ्कृतिः।
काव्यानि देशभाषाऽवसरोक्तिर्यावनं मतम्।
देशादिधर्मा द्वात्रिंशदेता विद्याभिसंज्ञिता।।"
(शुक्रनीति ४. ३. २७-३०)

''ऋक्, यजुः, साम तथा अथर्व – ये चार वेद हैं। क्रमशः आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, तथा तन्त्र (स्थापत्यवेद) – ये चार उपवेद हैं।। शिक्षा , व्याकरण, कल्प , निरुक्त, ज्योतिष तथा छन्द- ये वेदोंके षडङ्ग हैं।। मीमांसा, न्याय, साङ्ख्य, वेदान्त, योग, इतिहास, पुराण, स्मृति, नास्तिकमत, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, शिल्पशास्त्र, अलङ्कारशास्त्र, काव्य, राष्ट्रभाषा, सूक्तिशास्त्र, यवनोंका मत तथा वैदेशिक धर्मग्रन्थ-ये बत्तीस विद्या नामसे जाने जाते हैं।।"

''आयुर्वेदो धनुर्वेदो मीमांसा न्यायविस्तरः।
धर्मशास्त्रं च तत्सर्वमग्निहोत्रकृते कृतम्।।
छन्दः शिक्षा च कल्पश्च तथा व्याकरणानि च।
शास्त्रं ज्योतिर्निरुक्तं चाप्यग्निहोत्रकृते कृतम्।।
इतिहासपुराणं च गाथाश्चोपनिषत् तथा।
आथर्वणानि कर्माणि चाग्निहोत्रकृते कृतम्।।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१.ज्योतिष

(महाभारत - आश्वमेधिकपर्व ९२. दाक्षिणात्य)

" आयुर्वेद, धनुर्वेद, मीमांसा, विस्तृत न्यायशास्त्र, धर्मशास्त्र, छन्द, शिक्षा , कल्प , व्याकरण, ज्यौतिष, निरुक्त, इतिहास , पुराण , गाथा, उपनिषत् और अथर्ववेदके कर्म भी अग्निहोत्रको जानकर उसके सम्पादनके लिए हैं।।"

दर्शादि वैदिक कर्माङ्ग हैं। उनके अनुष्ठानके लिए कालज्ञान अपेक्षित है। कालज्ञानके लिए भगवान् आदित्य और गर्गाचार्यादिविरचित ज्योतिषका ज्ञान अपेक्षित है। जिससे तिथि, नक्षत्र, योग, मुहूर्त, करण और ग्रहोंकी गतिद्वारा कालज्ञान अर्थात् समय निर्धारण होता है और जिसके संहिता, होरा तथा गणित – ये तीन स्कन्द हैं, उसे ज्योतिष कहते हैं। –

"तिथिनक्षत्रयोगानां मुहूर्तकरणात्मकम्।
कालस्य वेदनार्थं तु ज्योतिर्ज्ञानं पुरानघ।।"

(महाभारत - आश्वमेधिकपर्व ९२. दाक्षिणात्य)

"हे अनघ! तिथि, नक्षत्र, योग, मुहूर्त और करणरूप कालका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये पूर्वकालमें ज्योतिःशास्त्रका निर्माण हुआ।।"

ध्यान रहे;

"परीक्ष्यकारी युक्तश्च स सम्यगुपपादयेत्।
देशकालावभिप्रेतौ ताभ्यां फलमवाप्नुयात्।।"

(महाभारतशान्तिपर्व १३७.२४)

"जो पुरुष प्रामाणिक निरीक्षण – परीक्षण कर सतत संयत

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और सावधान रहनेवाला है, वह अभीष्ट देश और कालका सम्यक् उपयोग करनेमें समर्थ होता है और उनके सहयोगसे अभीष्ट फल प्राप्त कर लेता है।।"

"एतौ धर्मार्थशास्त्रेषु मोक्षशास्त्रेषु चर्षिभिः।
प्रधानाविति निर्दिष्टौ कामे चाभिमतौ नृणाम्।।"
(महाभारतशान्तिपर्व १३७.२३)

"ऋषियोंने धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा मोक्षशास्त्रमें इन देश और कालको कार्यसिद्धिका प्रधान उपाय बताया है। मनुष्योंकी कामनासिद्धिमें अर्थात् कामपुरुषार्थकी समुपलब्धिमें भी ये देश और काल ही प्रधान माने गये हैं।।"

"काष्ठाः कला मुहूर्ताश्च दिवा रात्रिस्तथा लवाः।
मासाः पक्षाः षड् ऋतवः कल्पः संवत्सरास्तथा।।
पृथिवी देश इत्युक्तः कालः स च न दृश्यते।
अभिप्रेतार्थसिद्ध्यर्थं ध्यायते यच्च तत्तथा।।"
(महाभारतशान्तिपर्व १३७.२१,२२)

"काष्ठा, कला, मुहूर्त, दिन, रात, लव, मास, पक्ष, छह ऋतु, सम्वत्सर और कल्प – इन्हें काल कहते हैं तथा पृथ्वीको देश कहा जाता है। इनमें देशका तो दर्शन होता है, परन्तु काल दृष्टिगोचर नहीं होता। अभीष्ट मनोरथकी सिद्धिके लिए जिस देश और कालको उपयोगी मानकर उसका विचार किया जाता है, उसको ठीक – ठीक ग्रहण करना चाहिये।।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१.ज्योतिष

आत्मा, देश, काल, उपाय, कृत्य तथा सहाय – नामक षड्वर्ग नीतिद्वारा सञ्चालित होनेपर उन्नतिके कारण होते हैं। अभिप्राय यह है कि देह, इन्द्रिय, प्राण और अन्तःकरण तथा वासनाबीज अज्ञान–समवेत आत्मा , प्राची आदि दिक् , काशी आदि क्षेत्ररूप देश, भूत – भविष्यत् – वर्तमान तथा प्रातः – मध्याह्न – सायम् आदि काल, कार्यसाधक प्रकाररूप उपाय, देश – काल – पात्रानुरूप कार्यविशेषरूप कृत्य एवम् द्रव्य, आचार्य, मन्त्री, पत्नी, परिकरादि सहायकका उपयोग, प्रयोग, विनियोग कर्मसिद्धिके षड्वर्ग हैं। –

''आत्मा देशश्च कालश्चाप्युपायाः कृत्यमेव च।
सहायाः कारणं चैव षड्वर्गो नीतिजः स्मृतः।।''
(महाभारत – शान्तिपर्व ५९.३२)

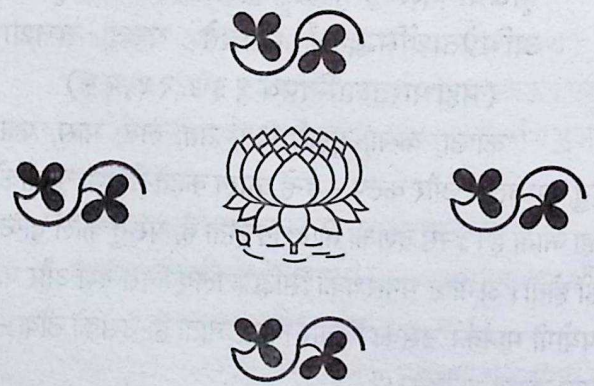

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२.कालस्वरूप

२.कालस्वरूप

ब्रह्मके मूर्त तथा अमूर्त दो रूप हैं। जो मूर्त है , वह असत्य है और जो अमूर्त है, वह सत्य है। सत् –संज्ञक अमूर्त ब्रह्म ज्योति है ।–

'द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्तं चामूर्तं च । अथ यन्मूर्तं तदसत्यम्। यदमूर्तं तत्सत्यं, तद् ब्रह्म तज्ज्योतिः।' (मैत्रायण्युपनिषत् ६.३)

अक्षरसंज्ञक ब्रह्मसे कालका उद्भव मान्य है।–

'अक्षरात्संजायते कालः' (अथर्वशिर उपनिषत्)

ब्रह्मके काल तथा अकाल दो रूप हैं। जो आदित्यके पूर्व है, वह अकाल अकल है और जो आदित्यके पश्चात् है, वह काल सकल है। जो संवत्सर है, वह सकलका रूप है। –

'द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे कालश्चाकालश्च।
अथ यः प्रागादित्यात्सोऽकालोऽकलः।
अथ य आदित्यात्पश्चात् स कालः सकलः।
सकलस्य वा एतद्रूपं यत्संवत्सरः।'
(मैत्रायण्युपनिषत् ६.१५)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालसंज्ञक आदित्यकी उपासना करे। आदित्य ब्रह्म है। –

'कालसंज्ञमादित्यमुपासीतादित्यो ब्रह्म'

(मैत्रायण्युपनिषत् ६.१६)

पञ्च स्थूल भूत, पञ्च सूक्ष्म भूत, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय तथा मन – बुद्धि – चित्त – अहङ्कारसंज्ञक अन्तःकरण चतुष्टय – ये चौबीस तत्त्व प्रकृतिके कार्य हैं। प्रकृतिसंज्ञक प्रधान पचीसवाँ तत्त्व काल है। –

'यः कालः पञ्चविंशकः'(श्रीमद्भागवत ३.२६.१५)

किसी भी व्यक्ति तथा वस्तुकी उत्पत्ति, स्थिति तथा संहृति (लय) किसी देश और कालमें ही सम्भव है। किसी भी कार्यका उपादान उसका देश है। जैसे कि घटका उद्भव – स्थिति – लयस्थानरूप उपादान मृत्तिका उसका देश है। किसी भी कार्यके उद्भव – स्थिति तथा लयका क्षण उसका काल है। कारणको कार्यकी संरचनाके अनुरूप और कार्यको उसकी स्थिति तथा कारणभावापत्तिके अनुरूप क्रियाशील करनेवाला काल है। त्रिगुणकी साम्यावस्था मूलप्रकृतिमें महासर्गके प्रारम्भमें क्षोभ उत्पन्न कर उसे सर्गके अनुरूप करनेवाला काल है। –

'कालाद्गुणव्यतिकरः' (श्रीमद्भागवत २.५.२२),

'प्रकृतेर्गुणसाम्यस्य निर्विशेषस्य मानवि।

चेष्टायतः स भगवान् काल इत्युपलक्षितः।।'

(श्रीमद्भागवत ३. २६. १७)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२.कालस्वरूप

सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वर मूल देश और उनका ईक्षणरूप सङ्कल्प मूल काल है। अतएव जगत् बनानेवाला निमित्त तथा बनानेवाला उपादान स्वयं सर्वेश्वर है –

'तदात्मानं स्वयमकुरुत' (तैत्तिरीयोपनिषत् २.), 'कालश्च हेतुश्च ' (श्रीमद्भागवत ११.२८. १८)- 'कालः कलयति प्रकाशयति यः तथा हेतुः कारणं च यत् तदेव । उपादानकारणं , निमित्तं प्रकाशकं च ब्रह्म।' (श्रीधरी)

जिस प्रकार मृत्तिका स्निग्धता नामकी घटोत्पादिनी शक्तिके द्वारसे घट होती है; उसी प्रकार सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वर प्रधानसंज्ञक त्रिगुणमयी प्रकृतिरूपा मायाशक्तिके द्वारसे कार्यात्मक जगत् होता है। सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वर और प्रकृतिरूपा मायाशक्ति, तद्वत् पुरुषका प्रभाव अर्थात् सर्वेश्वरकी संहारणी शक्ति तथा प्रकृतिरूपा माया तथा पुरुषका संयोग काल है। –

'प्रधानं पुरुषं प्राहुः कालमेके यतो भयम्।।'
(श्रीमद्भागवत ३. २६. १६)
'प्रभावं पौरुषं प्राहुः कालमेके यतो भयम्।।'
(श्रीमद्भागवत ३. २६. १६)
'कालो मायात्मसम्बन्धः'
(सूतसंहिता २ , ज्ञानयोगखण्ड २ . १०)
प्रधानं पुरुषश्चैव तत्त्वद्वयमुदाहृतम् ।
तयोरनादिनिर्दिष्टः कालः संयोजकः परः।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रयमेतदनाद्यनन्तमव्यक्ते समवस्थितम् ।
(अद्भुतरामायण - सर्ग १२ .८१)

उक्त रीतिसे कलनात्मिका शक्ति तथा उससे अवच्छिन्न चैतन्य काल है। –

'कालः कलयतामहम् ।।'
(श्रीमद्भगवद्गीता १०.३०)

कालका भी काल परमेश्वर क्षणादिरूपसे प्रसिद्ध अक्षीण काल है। –

'अहमेवाक्षयः कालः ।।'
(श्रीमद्भगवद्गीता १०.३३)

किसी भी कार्यका उत्पत्ति तथा स्थितिस्थानरूप उपादान उसका देश है; तद्वत् किसी भी कार्यका लयस्थानरूप उपादान उसका काल है। जब सन्निकट निर्विशेषरूप उपादान अपने सन्निकट सविशेषरूप कार्यके विशेष गुणको ग्रस लेता है, तब ग्रस्तगुण वह कार्य कारणभावापन्न हो जाता है। अतः किसी भी कार्यका उपादानरूप कारण उसका काल मान्य है। यथा; जल पृथ्वीके विशेष गुण गन्धका जब अपहरण कर लेता है, तब पृथ्वी जल हो जाती है। इसी प्रकार जब जलके विशेष गुण रसका तेज अपहरण कर लेता है, तब जल तेज हो जाता है। जब वायु तेजके विशेष गुण रूपका अपहरण कर लेता है, तब तेज वायु हो जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायुके विशेष गुण स्पर्शका जब आकाश अपहरण कर लेता है, तब वायु आकाश हो जाता है। आकाशके विशेष गुण वैखरी वाक् का जब अहङ्कार अपहरण कर लेता है, तब आकाश अहङ्कार हो जाता है। अहङ्कारके विशेष गुण मध्यमा वाक् का जब महत् अपहरण कर लेता है, तब अहङ्कार महत् हो जाता है। महत् के विशेष गुण पश्यन्ती वाक् का जब अव्याकृत अपहरण कर लेता है, तब महत् अव्याकृत हो जाता है। अव्याकृतके विशेष गुण परा वाक् का जब परब्रह्म अपहरण कर लेता है, तब अव्याकृत परब्रह्म होकर अवशिष्ट रहता है। (श्रीमद्भागवत १२.४, सुबालोपनिषत्)

उक्त रीतिसे सर्व देश, काल तथा वस्तुका मूल अव्याकृत तथा परम मूल परब्रह्म सिद्ध है। उसीसे ज्योतिष आदि सर्व शास्त्रोंकी प्रवृत्ति तथा उसीमें सर्व शास्त्रोंका पर्यवसान है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३.कालाभिव्यञ्जक

अग्निसे सम्बद्ध ऋक् सर्व रूप (मूर्ति) का उद्भासक है। वायुसे सम्बद्ध यजुः सर्व गतिका सञ्चालक है। सूर्यसे सम्बद्ध साम सर्व तेजका सम्पादक है।

"ऋग्भ्यो जातान् सर्वशो मूर्तिमाहुः, सर्वा गतिर्याजुषी हैव शश्वत्। सर्वं तेजः सामरूप्यं हि शश्वत्, सर्वं ह्येतद् ब्रह्मणैव प्रसृष्टम् ।।" (तैत्तिरीयसंहिता)

चन्द्रसे सम्बद्ध अथर्व सर्व अन्न और आनन्दका निर्वाहक है। "आथर्वणां चन्द्रमा दैवतम्" (प्रणवोपनिषत्) "सोमः शवन्त्यामृतमयः, रसशक्तिश्च सोमात्मा" (बृहज्जाबालोपनिषत् १, २),

मार्कण्डेयमहापुराणके अनुसार कला, काष्ठा, निमेषादिरूप कालरूपसे अग्नि ही उल्लसित है। –

"कलाकाष्ठानिमेषादिरूपेणासि जगत्प्रभो।
त्वमेतदखिलं कालः परिणात्मको भवान्।।"
(मार्कण्डेयमहापुराण ९६.५१)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायु और आदित्यका साहचर्य है। आदित्यमण्डलसे समुद्भूत आदित्यरश्मियोंपर समारूढ अर्थात् सूर्यकिरणोंके समाश्रित महान् वायुकी आकाशमें सर्वत्र गति अद्भुत आश्चर्य है। –

"यतो वायुर्विनिःसृत्य सूर्यरश्म्याश्रितो महान्।
विजृम्भत्यम्बरे तत्र किमाश्चर्यमतः परम्।।"
(महाभारत – शान्तिपर्व ३६२.४)

कालकारण सूर्य कालाभिव्यञ्जक तथा ब्रह्मरूपसे उपास्य हैं।–

"सूर्यो योनिः कालस्य" (मैत्रायण्युपनिषत् ६.१४), "कालसंज्ञमादित्यमुपासीत। आदित्यो ब्रह्म।" (मैत्रायण्युपनिषत् ६. १६)

"आथर्वणां चन्द्रमा दैवतम्" (प्रणवोपनिषत्) के अनुसार अथर्ववेदका प्रादुर्भाव चन्द्रमासे हुआ। अथर्वके नौ प्रभेद मान्य हैं। अथर्व सौम्य है। पवित्रव्रत धारण करनेवाली कालविभागके ज्ञापनमें नियुक्त सोमकी सत्ताईस पत्नियाँ दक्षकन्या लोकव्यवहारका निर्वाह करनेवालीं नक्षत्रवाचक नामोंसे प्रसिद्ध हैं। –

"सप्तविंशतिः सोमस्य पत्न्यो लोकस्य विश्रुताः।
कालस्य नयने युक्ताः सोमपत्न्यः शुचिव्रताः।।
सर्वा नक्षत्रयोगिन्यो लोकयात्राविधानतः।"
(महाभारत – आदिपर्व ६६.१६, १६.१/२)

घ्राण, रसन, नेत्र, त्वक् तथा श्रोत्र – संज्ञक पञ्च ज्ञानेन्द्रिय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और मन, चित्त, अहं एवम् बुद्धि – संज्ञक अन्तःकरणचतुष्टय – ये नौ आध्यात्मिक – धरातलपर कालविभाग करनेवाली शक्तियाँ हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सङ्कल्प, स्मरण, गर्व, निश्चय – ये नौ आधिभौतिक धरातलपर कालविभाग करनेवाली शक्तियाँ हैं। अश्विनी (धरित्री), वरुण (जल), सूर्य (तेज), वायु, दिक् (आकाश), चन्द्रमा, वासुदेव, रुद्र, ब्रह्मा – ये नौ आधिदैविक धरातलपर कालविभाग करनेवाली शक्तियाँ हैं। अतएव अथर्ववेदके नौ प्रभेद हैं।

धर्म, काम, अर्थसाधक वसु तथा वासुकि, मोक्षार्थ बोधप्रदायक अनन्त तथा कपिल और पुरुषार्थसाधक काल – ये सात पृथ्वीके धारक हैं। –

"धर्मः कामश्च कालश्च वसुर्वासुकिरेव च।
अनन्तः कपिलश्चैव सप्तैते धरणीधराः।।"
(महाभारत – अनुशासनपर्व १५०.४१)

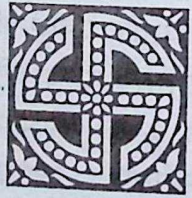

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४. कालावयव

४. कालावयव

पृथ्वी, जल, तेज , वायु – संज्ञक भूतचतुष्टयके सूक्ष्मतम अविभाज्य और असंस्पृष्ट चरम विभागका नाम **परमाणु** है। उसका भोग करनेमें अर्थात् उसे पार करनेमें सूर्यको जितना समय लगता है, उसे **परमाणुकाल** कहते हैं। अणु, त्रसरेणु, त्रुटि, वेध, लवक्रमसे एक निमेषकी प्राप्ति होती है। ७,२००(सात हजार दो सो) परमाणुओंका मात्रासंज्ञक एक निमेष होता है। तदनन्तर क्षण, काष्ठा, लघु, दण्ड (नाडिका), मुहूर्त, प्रहर (याम), दिन, रात्रि, पक्ष, मास, अयन, वर्ष– संज्ञक कालावयवकी क्रमशः प्राप्ति होती है। मानवोचित गणनाके अनुसार ३१ नील, १० खरब, ४० अरब वर्ष सृष्टिकी तद्वत् महाप्रलयकी अवधि होती है।

एक वर्षमें बारह महीने होते हैं। चन्द्रमा आदि ग्रह, अश्विनी आदि नक्षत्र तथा समस्त तारामण्डलके अधिष्ठाता भगवान् सूर्य कालस्वरूप हैं। वे परमाणुसे लेकर संवत्सर (वर्ष) – पर्यन्त कालमें द्वादशराशिपर सम्पूर्ण भुवनकोशकी निरन्तर परिक्रमा किया

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करते हैं। सूर्य, बृहस्पति, सवन, चन्द्रमा और नक्षत्रसम्बन्धी महीनोंके भेदसे यह वर्ष ही सम्वत्सर, परिवत्सर, इडावत्सर, अनुवत्सर और वत्सर कहा जाता है।

इन पाँच प्रकारके वर्षोंकी प्रवृत्ति करनेवाले सूर्यदेव पञ्चभूतोंमें तेजःस्वरूप हैं। अपनी कालशक्तिसे बीजादि पदार्थोंकी अङ्कुरोत्पादिनी शक्तिको अनेक प्रकारसे कार्योन्मुख करते हैं। ये पुरुषोंकी मोहनिवृत्तिके लिए उनकी आयुका क्षय करते हुए आकाशमें विचरते रहते हैं। ये ही सकाम पुरुषोंको यज्ञादि कर्मोंसे प्राप्त होनेवाले स्वर्गादि मङ्गलमय फलोंका विस्तार करते हैं। उपहारादि समर्पण करके ये पूजा करने योग्य हैं। –

यः सृज्यशक्तिमुरुधोच्छ्वसयन् स्वशक्त्या
पुंसोऽभ्रमाय दिवि धावति भूतभेदः।
कालाख्यया गुणमयं क्रतुभिर्वितन्वं-
स्तस्मै बलिं हरत वत्सरपञ्चकाय।।
(श्रीमद्भागवत ३ . ११. १५)

नाम – रूपात्मक जगत् में अनुगत सत्य, शिव, सुन्दर सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वरसंज्ञक ग्रहसे गृहीत प्रह्लाद – सदृश भक्तपर क्रूरग्रहकी दाल नहीं गलती। –

न्यस्तक्रीडनको बालो जडवत्तन्मनस्तया।
कृष्णग्रहगृहीतात्मा न वेद जगदीदृशम्।।
(श्रीमद्भागवत ७.४.३७)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह, भेषज, जल, पवन तथा पट आदि सुयोग प्राप्त कर दु:खापहारक सुखकारक सुवस्तु होते हैं। –

ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग।।
(रामचरितमानस ७ . क)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

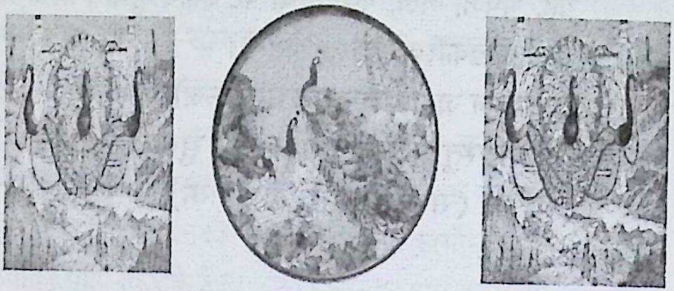

५.कालात्मा

कालो देशः क्रिया कर्ता करणं कार्यमागमः।
द्रव्यं फलमिति ब्रह्मन् नवधोक्तोऽजया हरिः।।
(श्रीमद्भागवत १२.११.३१)

'शौनकजी! एक भगवान् ही मायाके द्वारसे काल, देश, यज्ञादि क्रिया, कर्ता, स्रुवादि करण, यागादि कर्म, मन्त्र, शाकल्यादि द्रव्य और फलरूपसे नौ प्रकारके कहे जाते हैं।।'

श्रीमद्भागवत – पञ्चमस्कन्ध अध्याय २१ और द्वादशस्कन्ध अध्याय ११ के अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है कि कालचक्रनिर्वाहक, लोकतन्त्रप्रसाधक कालावयव ग्रह तथा नक्षत्र वेदमूर्ति सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वरकी अभिव्यक्ति हैं। पृथ्वी और द्युलोकके मध्यवर्ती आदित्यसंज्ञक सूर्य नभोमण्डलमें स्थित हैं। वे मेषादि राशियोंके नामसे प्रसिद्ध सम्वत्सरावयव चैत्रसे फाल्गुनपर्यन्त बारहमासोंके भोक्ता हैं। मासक्रमसे विभक्त धाता,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्यमा, मित्र, वरुण, इन्द्र, विवस्वान्, त्वष्टा, विष्णु, अंशु, भग, पूषा, पर्जन्य नामक कालात्मा सूर्यके मासक्रमसे विभक्त ऋषि, गन्धर्व, अप्सरा, नाग, यक्ष, राक्षस तथा देवसंज्ञक युग्म (द्वन्द्व, जोड़े) सप्तगण तथा बालखिल्यसंज्ञक साठ हजार अन्य ऋषि सहायक परिकर हैं। सप्त द्वन्द्वकी दृष्टिसे चौदह, धातादि संज्ञक सूर्यदेवातिरिक्त षड् द्वन्द्वकी दृष्टिसे बारह तथा गणकी दृष्टिसे सात तथा छह सङ्ख्या है।

'यस्मादेवमिदं सर्वं आददाना यन्ति तस्मादादित्या इति' (बृहदारण्यकोपनिषत् - शाङ्करभाष्य ३.९.५.) के अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है कि आयु और कर्मफलप्रदायक सम्वरात्मक द्वादश आदित्य हैं। आध्यात्मिक धरातलपर प्राणपवनसे उद्दीप्त श्रोत्र, त्वक् , चक्षु , जिह्वा, घ्राण - संज्ञक पञ्च ज्ञानेन्द्रिय; वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ - संज्ञक पञ्च कर्मेन्द्रिय और कोशकी विवक्षासे मन तथा बुद्धि - संज्ञक अन्तःकरणप्रभेद द्वादश सम्वत्सर हैं। क्रमशः इनके दिक्, वात, अर्क, प्रचेता (वरुण), अश्विनी ; तद्वत् वह्नि, इन्द्र, उपेन्द्र, प्रजापति, मृत्यु तथा चन्द्र और ब्रह्मा - नामक अधिदैव द्वादश आदित्य हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध - ग्रहणमें प्रयुक्त तथा विनियुक्त क्रमशः श्रोत्र, त्वक् , चक्षु , जिह्वा, घ्राण - संज्ञक पञ्च ज्ञानेन्द्रियोंका शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध - विसर्जनमें प्रयुक्त तथा विनियुक्त

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रमशः वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ – संज्ञक पञ्च कर्मेन्द्रियोंसे सामञ्जस्य है। मन ज्ञान – कर्म उभयात्मक है। अत एव षड् द्वन्द्वकी तथा बुद्धिसहित सप्तद्वन्द्वकी एवम् सप्तगणकी सिद्धि होती है। विषय-इन्द्रिय-स्वभाव (शीतोष्णादि धर्म) – चेतना, कामादि तथा देहगत रस- रक्तादि सप्त धातुओंके अभिव्यञ्जकसंस्थान आत्माधिष्ठित प्राणस्पन्दित जठरानल हैं। इनसे उद्दीप्त इन्द्रिय , मन, बुद्धिसापेक्ष कर्म, काम, ज्ञान, आयुकी सिद्धि निम्नलिखित वचनोंके अनुशीलनसे सिद्ध है।

'इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।'
(श्रीमद्भगवद्गीता ३. ४०)

'विज्ञानं यज्ञं तनुते , कर्माणि तनुतेऽपि च'
(तैत्तिरीयोपनिषत् २.५)

''ज्ञानमूष्मा च वायुश्च त्रिविधः कार्यसङ्ग्रहः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थाश्च स्वभावश्चेतना मनः।
प्राणापानौ विकारश्च धातवश्चात्र निःसृताः।।''
(महाभारत - शान्तिपर्व २१९.९)

'इन्द्रियाणीन्द्रियार्थाश्च स्वभावश्चेतना मनः।
प्राणापानौ च जीवश्च नित्यं देहेषु देहिनाम्।। '
(महाभारत - शान्तिपर्व २३९.१३)

ध्यान रहे; लोकतन्त्र (लोकव्यवहार) का सम्पादक तथा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५.कालात्मा

धरणीधारक कालका परिज्ञान ज्योतिषके अनुशीलनसे सम्भव है। अनुरूप काल धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष – सम्पादक है ; जब कि विरूप काल सर्वापहारक।

कालके क्षणादि अवान्तरभेदके सहित उसके मौलिकस्वरूपका विज्ञान भवतारक है। किसी भी वस्तु या व्यक्तिकी अभिव्यक्तिमें देश तथा कालकी विद्यमानता अनिवार्य है। देश, काल, वस्तुके विज्ञानसे सर्वविध उत्कर्ष सुनिश्चित है। देश, काल, वस्तु – परिच्छेदशून्य सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वरकी निजशक्तिरूपा मायायोगसे देश, काल, वस्तुरूपसे स्फूर्तिका रहस्य जानकर तदर्थ देश, काल, वस्तुका उपयोग तथा विनियोग सर्वसुमङ्गल है।

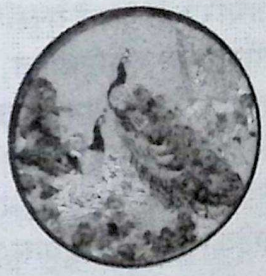

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ

अनुरोध

श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरी - उड्यानपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती महाभागद्वारा संस्थापित 'स्वस्तिप्रकाशनसंस्थान' से प्रकाशित धर्म, अध्यात्म, संस्कृति, आयुर्वेद, गणित तथा राष्ट्रविषयक सुदुर्लभ शताधिक ग्रन्थोंका अनुशीलनकर सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुरक्षित, सम्पन्न, सेवापरायण और स्वस्थ व्यक्ति तथा समाजकी संरचनामें तथा स्वयंके सर्वविध उत्कर्षमें जीवनका उपयोग और विनियोग अवश्य करें; तद्वत् सुयोग्य पाठकों और संस्थानों तक संस्थानकी पुस्तकोंको पहुँचानेका प्रमोदपूर्ण प्रयास अवश्य करें।

भवदीय

स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसञ्चालक

स्वामी निर्विकल्पानन्दसरस्वती

निज सचिव श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रातः ६, मध्याह्न १०, अपराह्न २, सायं ६ एवम् रात्रि १०बजे सर्वहितकी भावनासे निम्नलिखित प्रार्थना प्रत्येक सत्रमें पाँच - पाँच बार व्यक्तिगतरूपसे तथा आध्यात्मिक संस्थानोंके माध्यमसे आस्था तथा उत्साहपूर्वक नित्य कर्त्तव्य है। छान्दोग्योपनिषत् २.१४.१ तथा महाभारत-शान्तिपर्व ३३७.३०के अनुसार प्रतिदिन पाँच बार भगवद्भजनसे सर्वार्थसिद्धि सुनिश्चित है।-

प्रार्थना

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदताम्
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी।।
(श्रीमद्भागवत ५. १८.९)

"हे प्रभो ! विश्वका कल्याण हो, दुष्ट दुष्टतासे विनिर्मुक्त होकर प्रमुदित हो! सब एक - दूसरेका हित चिन्तन करें। हमारा मन शुभमार्गमें प्रवृत्त हो तथा हमारी बुद्धि निष्कामभावसे आप स्वप्रकाश सदानन्दस्वरूप भगवान् श्रीहरिमें निमग्न हो।।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

श्रीहरिः

श्रीगणेशाय नमः

पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ -स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

१.शुकसुधा
२.श्वेताश्वतरोपनिषत् अध्याय १-३ (व्याख्यासहित)
३.श्वेताश्वतरोपनिषत् अध्याय ३-६ (व्याख्यासहित)
४.नासदीयसूक्तम् (सायणभाष्यानुवादसहित)
५.कुन्तीस्तुतिः (विस्तृत व्याख्यासहित)
६ श्रीराधारस और रसिकशेखर
७ श्रीराधारससुधा और श्रीकृष्णरसवैभव
८.पीठपरिषद् और उसके अन्तर्गत आदित्यवाहिनी और आनन्दवाहिनी
९. सुखमयजीवनका सनातनसिद्धान्त
१०.विश्वशान्तिका सनातनसिद्धान्त
११.स्वस्तिकगणित
१२.सार्वभौमसनातनसिद्धान्त
१३.सारार्थदीपिका
१४.शारीरकस्वाराज्यसिद्धिसारसमाख्या
१५.सनातनधर्मियोंका रसरहस्यमय बहुदेवादिवाद
१६.जीवनज्योति
१७.शिवावतार भगवत्पाद आदि शङ्कराचार्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

१८.गीताजयन्ती और भीष्मोत्क्रान्ति
१९.अनमोलवचन
२०.नीति और अध्यात्म
२१.नीतिसूक्तम्
२२.आयुर्विज्ञान
२३.अध्यात्मरहस्य
२४.श्रीमद्भगवद्गीतामें योगचतुष्टय
२५.सनातनसन्देश
२६.व्रतस्वरूपविमर्श
२७.बालजागरण
२८.श्रीमद्भगवद्गीतामें कर्मतत्त्व
२९.श्रीमद्भगवद्गीतामें पुरुषार्थ चतुष्टय
३०.नीतिचालीसा
३१.श्रीजगन्नाथ और उनकी रथयात्रा
३२.व्यूहरचना
३३.अङ्कपदीयम्
३४.गणितदर्शन
३५.पावनसन्देश
३६.दिग्दर्शन
३७.राष्ट्ररक्षा
३८.परमार्थसार
३९.ब्रह्मज्ञानावलीमाला
४०.करुणा, कठोरता और कर्त्तव्यनिष्ठा
41.The Eternal Principles Of Happy Life
४२.श्रीमद्भगवद्गीतामें ज्ञानतत्त्व

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

४३.क्रान्तिबिन्दु
४४.दिव्यानुभूति (प्रथम भाग)
४५.अवतारमीमांसा
४६.विचित्र सम्वाद
४७.वैदिकार्षगणित (प्रथम भाग)
४८.प्रवचनपीयूष
४९.बौद्धागमवृत्तान्त तथा निगमागमसिद्धान्त
५०.नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्
५१.गणितचिन्तामणि
५२.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ
53.The Philosophy of Mathematics
54.Swastik - Ganita
55.Nature of Numbers
56..Bhagawan Shree Krisna
५७.श्रीगीतासुधा
५८.श्रीराधासुधा
५९.जगदीश्वर, जीव और जगत्
६०. भागवतसुधा
६१. श्रीजगन्नाथाष्टकम्
६२. श्रीसागर – गङ्गा – आरती
६३. ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय – गोवर्द्धनमठ – पुरीपीठ
६४. भगवान् श्रीकृष्ण (हिन्दी अनुवाद)
६५. वैदिकार्षप्रक्रियाप्रकाश
६६. शून्यैकसिद्धि और द्व्यङ्कपद्धति
६७. सनातनधर्म

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

68. Sanatan - Dharma
69. Ganita Chintamani
७०. पूर्वाम्नाय – पुरीपीठ – परिचय– प्रदीप
७१. उद्बोधन
७२. सनातनधर्म – प्रश्नोत्तर – मालिक
७३. भावनोपनिषत् (भाष्यानुवादसहित)
७४. श्रीदक्षिणामूर्त्यष्टकम् (भाष्यानुवादसहित)
७५. योगमीमांसा (सूत्रानुवाद तथा व्याख्यासहित)
76..Bhagawan Shree Ram
७७. शून्यैकसिद्धि और द्व्यङ्कपद्धति (अङ्ग्रेजी अनुवाद)
७८. द्व्यङ्कपद्धतिकी वैदिकार्षविधा
७९. धर्मस्मृतिः
८०. बौद्धसिद्धान्त और वेदान्त
८१. भारत – वैभव
८२. वेदान्तरससार – सर्वसिद्धान्तसमन्वयप्रकार
०८३.सनातनसिद्धान्त
०८४.द्व्यङ्कादिपद्धतिकी वैदिकविधि
०८५.श्रीशिवावतार–भगवत्पाद–आदिशङ्कराचार्य
०८६.हस्तामलकस्तोत्रम्
०८७.तोटकस्तुतिः
०८८.मूकाम्बिकास्तुतिः
०८९.श्रीहरिशङ्करस्तुतिः
०९०.स्वरूपसिद्धिः
०९१.गणितसूत्रम्
०९२.राष्ट्रोत्कर्ष–अभियान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

०९३.राजधर्म
०९४.सूत्रगणितम्
०९५.वैदिकार्षप्रक्रियाप्रकाश
०९६.गुरुवंश-मठाम्नाय-दिग्दर्शन-सेतु-महानुशासनम्
०९७.धर्मेश्वरसंहिता
०९८.चतुर्व्यूह-परिशीलन
०९९.सनातनवर्णव्यवस्थाकी उपयोगिता
१००.दिव्यानुभूति - जीवनज्योति . द्वितीयभाग
१०१. गीताजयन्ती
१०२.महाकुम्भकी दिशा और दशा
१०३.पूज्य श्रीधर्मसम्राट् के महत्त्वपूर्ण उपदेश
१०४.गीतामान
१०५.त्रिपथगा
१०६.प्रणवप्रकल्प
१०७.श्रीमन्दिर - सेवा - समर्चा - प्रकल्प
१०८.ज्योतिष - दर्शन
१०९.श्रीगङ्गादिकी सुरक्षाके सर्वथा अनुरूप विकास-परियोजनाका स्वरूप
११०.उद्गार
१११.अकारो वै सर्वा वाक्
११२.गीताका सार्वभौम सिद्धान्त
११३.'विचारपीयूष' - सारार्थदिग्दर्शन
११४.प्रचारप्रकल्प
११५.चित्रालोक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

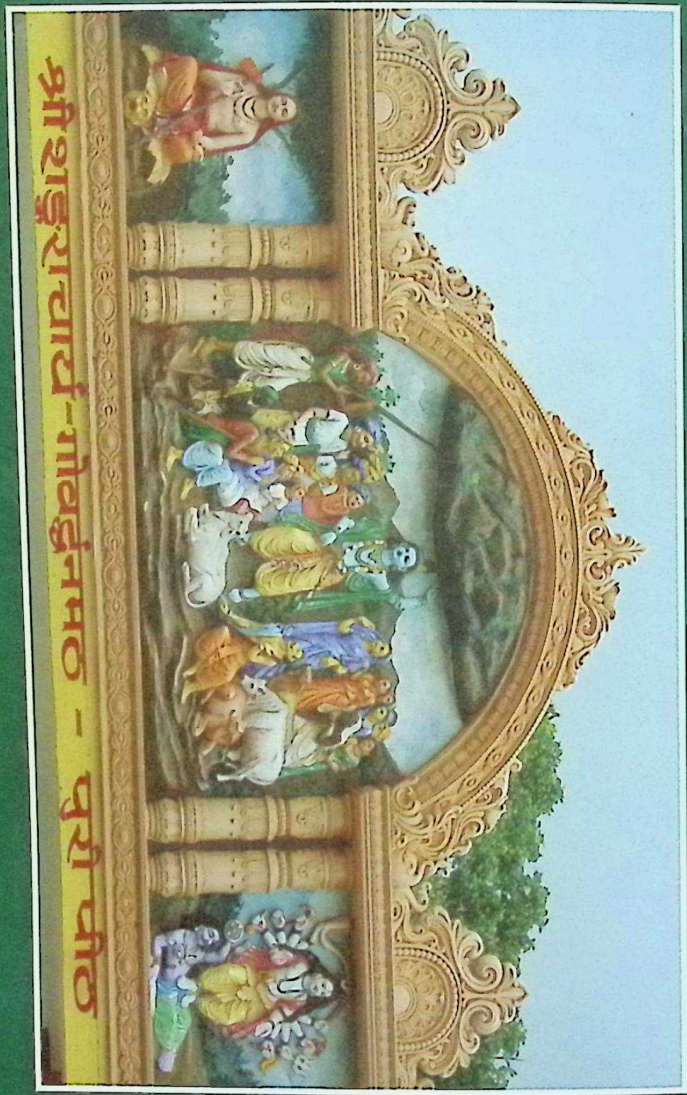

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal